गांधी और गांधीवाद

३० जनवरी १९५१

चौधरी चरण सिंह

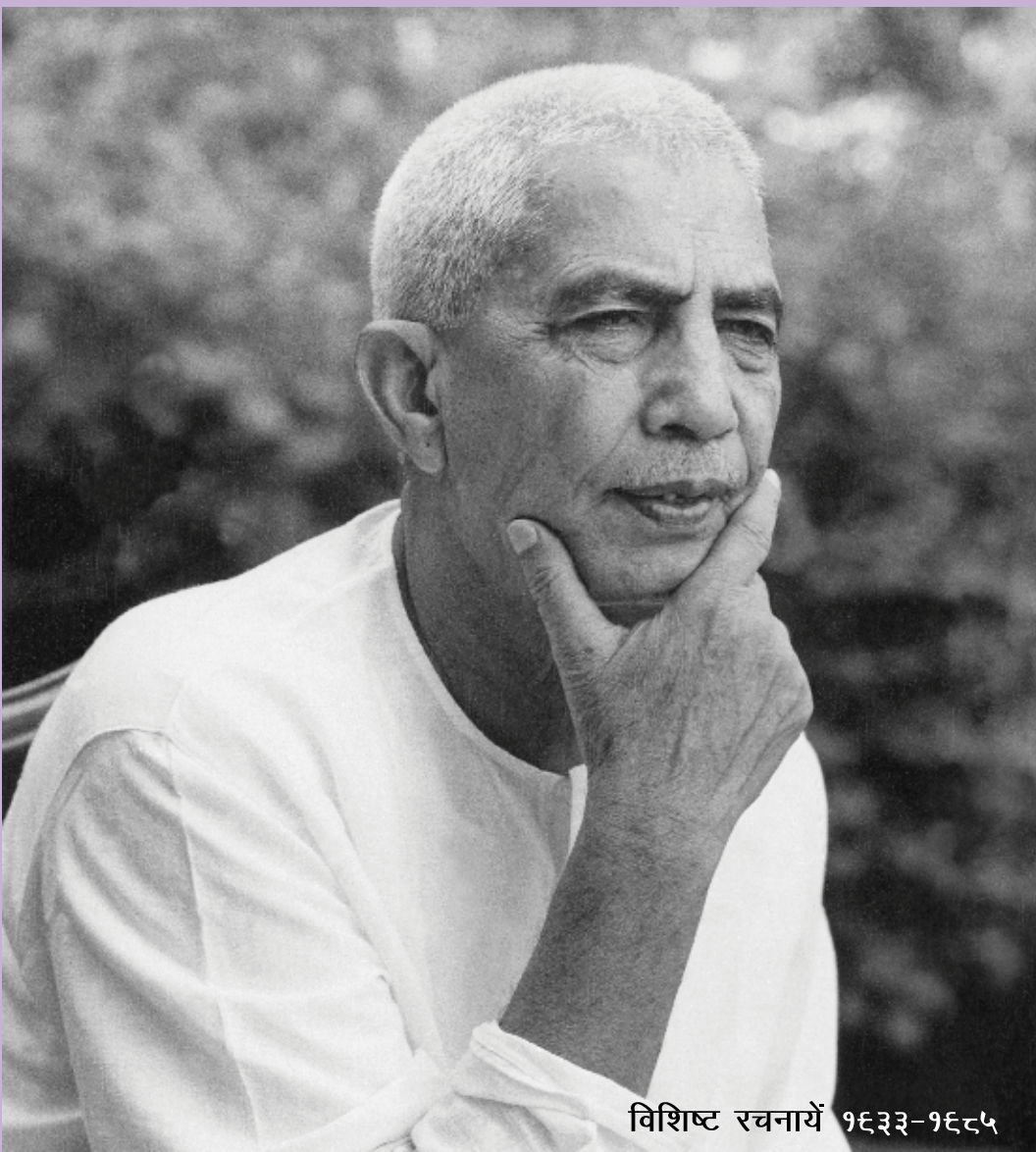

विशिष्ट रचनायें १९३३-१९८५

२६ जनवरी २०२२
चरण सिंह अभिलेखागार द्वारा प्रकाशित
www.charansingh.org
info@charansingh.org

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन को केवल पूर्व अनुमति के साथ
पुनः प्रस्तुत, वितरित या प्रसारित किया जा सकता है।
अनुमति के लिए कृपया लिखें info@charansingh.org

अक्षर तथा आवरण संयोजन राम दास लाल
सौरभ प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड, ग्रेटर नोएडा, भारत द्वारा मुद्रित।

चरण सिंह के पिता मीर सिंह तथा माता नेत्र कौर, १९५०

चरण सिंह का जन्म २३ दिसंबर १९०२ को "एक साधारण किसान के यहां छप्पर छवाये मिट्टी की दीवारों से बने घर में हुआ था, जहां आंगन में एक कुंआ था, जिसका पानी पीने और सिंचाई के काम आता था।"[1] संयुक्त प्रांत (उत्तर प्रदेश) के मेरठ जिले के नूरपुर गांव में एक पट्टेदार गरीब किसान की कच्ची मढ़ैया में पैदा हुआ यह शिशु आज़ाद भारत में देहात की बुलंद आवाज बना।

---

* चरण सिंह के अपने शब्दों में

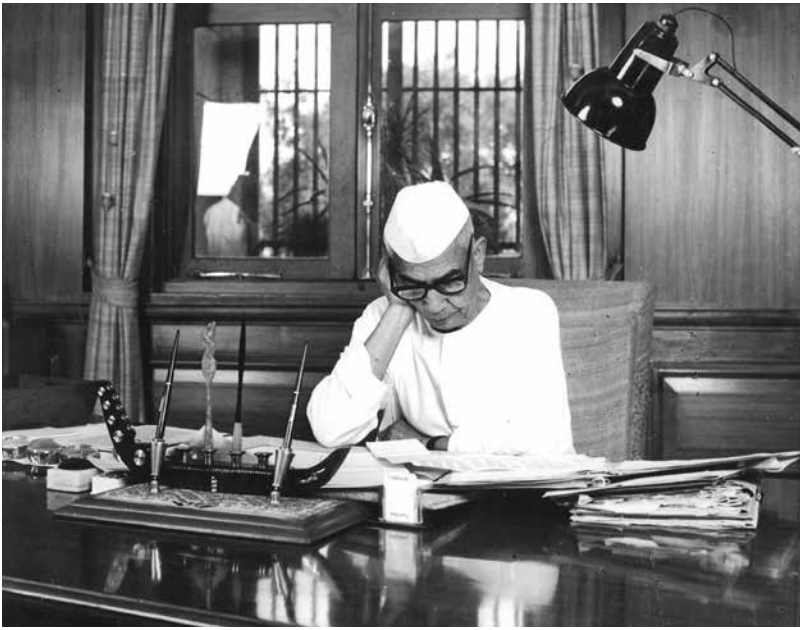

चौधरी चरण सिंह
भारत के प्रधान मंत्री। दिल्लीं, १९७९

ग्रामीण भारत के जैविक बुद्धिजीवी

१
गांधी और गांधीवाद

राजनीतिक जीवन की शुरुआत से ही चौधरी चरणसिंह की गांधी और गांधीवाद में अनन्य निष्ठा रही। वह जीवन भर गांधीवादी सिद्धान्तों के अनुगामी रहे। गांधीजी के प्रति उनके चिन्तन का संक्षिप्त परिचय चौधरी साहब के यहां दिये गये रेडियो भाषण से मिलता है, जो ३० जनवरी, १९५१ को आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र से, गांधीजी की तीसरी पुण्य तिथि पर, प्रसारित हुआ था। उस समय चौधरी साहब उत्तर प्रदेश विधान सभा में सभा सचिव थे।

आज से ठीक तीन वर्ष पूर्व महात्मा जी ने अपनी नश्वर देह का त्याग किया।

महात्मा जी ने जब जन्म लिया, उस समय तक सन् १८५७ की याद ताजा थी, बहुत से वीर सैनिक, जिन्होंने उस स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया था, जीवित थे। परन्तु पराजय के फलस्वरूप निराशा की काली घटाएं भारत के आकाश में छाई हुई थीं, राष्ट्रीय जीवन को पाला मार गया था और अंग्रेज विजय के मद में चूर, शोषण के नये–नये ढंग निकाल रहे थे तथा हमारी बेड़ियां और कसी जा रही थीं।

भारतवर्ष के इस पतन–काल में २ अक्टूबर, सन् १८६९ की बात है कि मोहनदास नाम के एक बालक ने गुजरात प्रान्त में जन्म लिया। इस बालक ने बड़े होकर जो–जो काम किये, उनका पूरा बखान करने के लिए एक बाल्मीकि अथवा व्यास की लेखनी चाहिए। आज तो मैं उसका कुछ महिमा–गान करके केवल अपनी वाणी पवित्र करना चाहता हूं।

इस बालक ने अनवरत परिश्रम करके भारतवर्ष के करोड़ों मूक जनों के राजनैतिक बन्धन ही नहीं काटे, प्रत्युत संसार भर के पीड़ित तथा सुख व शान्ति के प्यासे प्राणियों के लिए एक अमर संदेश भी दिया।

अब से ३० बरस पहले की बात है, जब कि मेरी पीढ़ी के लोग स्कूल व कालेजों में शिक्षा पा रहे थे, महात्मा जी ने अपने 'नवजीवन' नामक

साप्ताहिक पत्र में लिखा कि "मैं अंग्रेजी राज्य का बैरी हूं, क्योंकि वह शैतान की हुकूमत है परन्तु मैं अपने आपको अंग्रेजों का मित्र मानता हूं।" उनकी यह उक्ति उस समय के लोगों में से बहुत कम की समझ में आई। कम से कम नवयुवकों की अक्ल में नहीं बैठता था कि अंग्रेज और अंग्रेजी हुकूमत में क्या अन्तर है। हम लोग, जो कुछ हमारे देश में हो रहा था, उस सबके कारण, प्रत्येक अंग्रेज को अपना बैरी समझते थे। परन्तु आज भारतवर्ष का प्रत्येक जनसेवक जानता है कि महात्मा जी के उक्त कथन के पीछे जो सिद्धान्त है, अर्थात् मनुष्य और उसके कर्म में अन्तर है तथा हमको किसी मनुष्य से द्वेष नहीं करना चाहिए बल्कि उसके बुरे कर्म से स्वयं बचना चाहिए और उसका छुटकारा भी कराना चाहिए। उसी पर अमल करके समाज में शान्ति कायम हो सकती है।

प्रत्येक अंग्रेज का दिल व दिमाग उसी प्रकार काम करता व सोचता है, जैसे किसी हिन्दुस्तानी का। मानव–स्वभाव में केवल देश, नस्ल व रंग का भेद होने के कारण कोई अन्तर नहीं पड़ता। हो सकता है कि यदि हमारे पूर्वज किसी दूसरे देश को अपने अधीन कर लेते, तो हम भी वहां के निवासियों के साथ वही बर्ताव करते, जो अंग्रेजों ने हमारे साथ किया। महात्मा जी का अपने इसी तर्क के अनुसार यह भी कहना था कि ज़मींदारी प्रथा खराब है, उसे मिटाना चाहिए परन्तु जमींदार मेरा भाई है, उसे गले लगाना होगा और कहना न होगा कि ठीक इसी सिद्धान्त के अनुकूल, उत्तर प्रदेश के 'ज़मींदारी विनाश एवं भूमि व्यवस्था कानून' के अधीन जमींदार के साथ गांधीजी के अनुयायी बर्ताव कर रहे हैं।

अब यदि हम एक बार गांधी जी की इस धारणा की सच्चाई जान लेते हैं, तो हम अनिवार्य रूप से उनके दूसरे सिद्धान्त पर जाते हैं अर्थात् समाज व मनुष्य जाति का परस्पर बर्ताव प्रेम पर आश्रित हो, न कि घृणा पर। किसी मनुष्य अथवा कौम से हमें यदि उसका पाप, यानी, अज्ञानपूर्ण कर्म छुड़ाना है, जिससे हमको या किसी अन्य को कितनी बड़ी हानि ही क्यों न पहुंच रही हो, तो उससे द्वेष करके या उसके प्रति हिंसा और आघात करके नहीं, अपितु सत्य, प्रेम व अहिंसा पर अवलम्बित साधनों द्वारा ही छुड़ाया जा सकता है। द्वेष और हिंसा–द्वेष व हिंसा को ही जन्म देते हैं। आग पानी से ही बुझाई जा सकेगी न कि आग से और जब घृणा, असत्य व हिंसा का जवाब प्रेम, सत्य व अहिंसा से दिया जाएगा, तो दोनों पक्षों को लाभ पहुंचेगा, दोनों ही धन्य होंगे। न कोई विजेता रह जाएगा, न पराजित। बजाय बैर बढ़ जाने व दिल में कसक रह जाने के, प्रेम का साम्राज्य होगा और दोनों मित्र बन जाएंगे।

साध्य का क्या रूप होगा, यह बहुत कुछ साधन पर निर्भर रहता है। मैजिनी का उद्देश्य अर्थात् इटली की स्वतन्त्रता गैरीबाल्डी द्वारा हिंसा के बल पर संपादित हुई, परन्तु जो घरेलू युद्ध के फलस्वरूप इटली बनी, उसे देखकर मैजिनी कहने पर विवश हुए कि "यह इटली वह नहीं है, जिसका मैं स्वप्न देखा करता था। मैं अपनी प्यारी मातृ–भूमि की शव यात्रा देख रहा हूं।"

इसी प्रकार सन् ४७ की मार–काट के बाद जो पाकिस्तान बना और भारतवर्ष का रूप रह गया, उसे देखकर महात्मा क्षुब्ध थे। आज इंगलिस्तान तथा पाकिस्तान से जो भारतवर्ष के दो प्रकार के सम्बन्ध हैं, उनकी तह में उन साधनों का भेद ही दिखाई दे रहा है, जिनके द्वारा स्वराज्य लिया गया और जिनके द्वारा पाकिस्तान स्थापित किया गया।

हमने अंग्रेजों को गोली से नहीं मारा, यही नहीं, महात्मा जी ने उनको गाली भी नहीं देने दी। फल यह हुआ कि सदियों के बाद उनके फौलादी पंजों से हमारा छुटकारा हुआ, तो भी हमारे सम्बन्ध उनसे मधुर बने हुए हैं। इसके विपरीत मुस्लिम लीग ने हिन्दुओं के प्रति नफरत का राग अलापा और गांधी जैसे मुसलमानों के शुभ–चिन्तक को, जिसने अन्त में अपनी जान ही उनके लिए निछावर कर दी, 'मुसलमानों का दुश्मन नम्बर एक' कहा। इसके बाद जो पाकिस्तान बना, चाहे हिन्दुस्तानी व पाकिस्तानी अब तक एक मुल्क के निवासी व एक–दूसरे के खून के खून और एक–दूसरे की हड्डी की हड्डी से सम्बंध क्यों न रहे हों, उसके व हमारे सम्बन्धों में खिंचाव है।

सन् १९२१ में एक बार महात्मा जी का एक और कथन समाचार पत्रों में पढ़ने को मिला––"मैं सर तेज बहादुर सप्रू को उतना ही बड़ा और सच्चा देश–भक्त मानता हूं, जितना जवाहरलाल नेहरू को।" एक ओर सप्रू साहब वाइसराय की कार्यकारिणी के सदस्य और महकमा–न्याय के इंचार्ज थे और गवर्नमेंट का दमन चक्र जोरों से चल रहा था। दूसरी ओर भारत माता के अन्य हजारों सपूतों के साथ–साथ पं. जवाहरलाल जी अपने सुख व वैभव को लात मार कर जेलखाने में पड़े थे। महात्माजी का सप्रू साहब व नेहरू जी को एक ही कोटि में रख देना फिर हम लोगों की समझ में नहीं आया, बल्कि उससे एक प्रकार का धक्का लगा। परन्तु आज समझ में आ रहा है कि पंचायती राज यदि चलाना है, तो महात्मा के इस सिद्धान्त के बल पर ही चल सकता है, अन्यथा नहीं। जनतंत्र अर्थात् जहां जनता या उसके चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा ही शासन तंत्र चलाया जाता हो, तब ही सफल हो सकता है, जब कि हम अपने प्रतिद्वंद्वी को भी उतना ही ईमानदार मानें, जितना कि हम अपने आपको मानते हैं। मतभेद

होना दूसरी बात है, परन्तु मतभेद रखते हुए भी दो व्यक्ति ईमानदार हो सकते हैं, दोनों देश–भक्त हो सकते हैं। जनतंत्रवाद व अधिनायकवाद में यही मौलिक अन्तर है।

डिक्टेटर लोगों तथा उन राजनैतिक दलों का, जिनका किसी व्यक्ति विशेष या अपने दल की डिक्टेटरशिप में विश्वास होता है, पहला सिद्धान्त है कि "वह व्यक्ति जो मुझसे या हमसे भिन्न विचार रखता है, मूर्ख है या बदमाश है।" (The man who differs from me, is either a fool or a knave) उनकी राय में यह नहीं हो सकता कि जो मनुष्य अपने सिर में मस्तिष्क रखता हो, सच्चाई के साथ आपसे भिन्न राय रख सके। भिन्न राय रखता है, तो बेईमानी से रखता है और बदमाश है। और क्योंकि जब ईमानदारी व सही राय रखने का हमने ठेका ले लिया, तो फिर देश–हित का ठेका ले लेना सहज है। यही नहीं, देश–हित में मतभेद रखने वाले को तलवार के घाट उतार देना अनिवार्य और युक्तिसंगत जान पड़ता है।

महात्मा जी चरखे पर बड़ा बल देते थे। यहां तक कह देते थे कि चरखे से ही सच्चा स्वराज्य प्राप्त होगा। लोगों की समझ में न आता था कि यह फकीर चरखे द्वारा अंग्रेज जैसी शक्तिशाली कौम के मुकाबले में कैसे स्वराज्य दिला देगा, जब कि खेतों की मेड़ों के लिए हम किसान को लाठी इस्तेमाल करते हुए और दूसरे की जान लेते हुए देखते हैं। परन्तु हम भूलते थे–महात्मा वर्तमान व्यवस्था को केवल मिटा ही नहीं रहा था बल्कि साथ–साथ दूसरे, नये समाज की नींव रख रहा था। वह जानता था कि मनुष्य सच्चे अर्थों में तभी सुखी होता है, जबकि अपनी रोटी कमाने के धंधे में किसी के पराधीन न हो तथा मनुष्य अपने रोज़गार में तभी स्वतन्त्र कहा जा सकता है, जबकि वह अपने कार्य, रोज़गार या पैदावार के साधन का स्वयं मालिक हो और किसी दूसरे के हुक्म का बन्दा न हो अर्थात् अपने वक्त और अपनी मरजी का मालिक हो। परन्तु यह दशाएं तभी उपस्थित हो सकती हैं, जबकि आर्थिक इकाई छोटी हो, बड़ी न हो, जिसमें काम करने वालों की संख्या अधिक हो अथवा ऐसी हो, जहां श्रमिक या कारीगर स्वेच्छा से काम कर सकें और उसको अनिवार्य रूप से दूसरे का हुक्म न मानना पड़े। बड़ी आर्थिक इकाई में काम करने वालों की स्वतन्त्रता नष्ट हो जाती है, उन्हें अपने कारखाने आदि में बनी चीज पर कोई गर्व नहीं हो सकता, वह कठपुतली की तरह काम करते हैं। क्योंकि उन्हें दूसरों की आज्ञा मानने की आदत हो जाती है, उनमें स्वावलम्बन नहीं रहता तथा मैनेजर आदि के हुक्म का पालन करने की आदत हो जाती है। जहां मैनेजरों की संख्या अधिक होगी, चाहे वह फार्म के हों या कारखानों के, वहां हुक्म

देने की, दूसरे की स्वतन्त्रता हड़प करने की अर्थात् अधिनायकवाद की प्रवृत्तियां प्रबल हो जाएंगी।

गांधी जी के लिए चरखा केवल छोटे रोज़गारों का प्रतीक था। वह चाहते थे कि सिवाय उन वस्तुओं के बनाने वाले कारखानों के, जो छोटे पैमाने पर न बन सकती हों, सब चीजें अपने देश में लाखों, बिखरे हुए गांवों के अन्दर कारीगरों की झोंपड़ियों में बनें। ऐसी आर्थिक व्यवस्था में अधिक लोगों को काम मिलेगा अर्थात् कोई बेरोज़गार न रहेगा। मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास होगा, वह स्वतंत्र रहेगा और इस कारण सुखी भी। महात्मा न बिजली के विरोधी थे, न मशीनों के। केवल ऐसी मशीनें चाहते थे, जो चाहे बिजली से ही चलें, काम को हल्का करें और जिनके द्वारा कोई किसी का शोषण न कर सके।

गांधी जी के उपदेशों को तथा जो उपकार उन्होंने भारत की जनता और मनुष्य मात्र पर किये हैं, उनको गिनाना, जैसा मैंने पहले कहा है, मुझ जैसे व्यक्ति की सामर्थ्य के बाहर है। वह जादूगर थे, उन्होंने हमारे जीवन के जिस अंग पर भी दृष्टि डाली, उसमें क्रान्ति कर दी। उनका जीवन व उनका कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रकाश स्तम्भ का काम करता रहेगा। धन्य हैं वे लोग, जिन्होंने उनके बताये हुए मार्ग पर चलने की कोशिश की या जो आगे करेंगे और धन्य हैं भारत माता, जिसकी कोख में ऐसा लाल पैदा हआ। उनके श्री चरणों में मेरी लाख बार श्रद्धांजलि।

चौधरी चरण सिंह द्वारा रचित कृतियां

शिष्टाचार, १९४१. (२०१ पृष्ट)

हाउ टू एबोलिश जमींदारीः ह्विच एल्टरनेटिव सिस्टम टू एडाप्ट। (ज़मींदारी उन्मूलन कैसे करें: किस वैकल्पिक प्रणाली को अपनाएं) १९४७. इलाहाबादः सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, संयुक्त प्रांत।

एबोलिशन ऑफ ज़मींदारीः टू अल्टरनेटिव्ज। (जमींदारी उन्मूलनः दो विकल्प) १९४७. किताबिस्तान, इलाहाबाद. (२६३ पृष्ट)

एबोलिशन ऑफ जमींदारी इन यू० पी०: क्रिटिक अंसरड। (उत्तर प्रदेश में जमींदारी उन्मूलनः आलोचकों को जवाब) १९४९. इलाहाबादः सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, संयुक्त प्रांत।

व्हितहर कोआपरेटिव फार्मिंग? (सामूहिक खेती की दिशा?) १९५६. इलाहाबादः सुपरिन्टेन्डेन्ट प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, उत्तर प्रदेश।

एग्रेरियन रिवोल्यूशन इन उत्तर प्रदेश। (उत्तर प्रदेश में कृषि क्रांति) १९५७. प्रकाशन शाखा, सूचना विभाग, गवर्नमेंट ऑफ उत्तर प्रदेश १९५८ लखनऊ, सुपरिन्टेन्डेन्ट, प्रिंटिंग एंड स्टेशनरी, उत्तर प्रदेश। (६६ पृष्ट)

जॉइंट फार्मिंग एक्स–रैडः द प्रॉब्लम एंड इट्स सोल्यूशन। (संयुक्त खेतीः समस्या और समाधान) १९५९. किताबिस्तान, इलाहाबाद. (३२२ पृष्ट)

इण्डियाज पॉवर्टी एण्ड इट्स सोल्यूशन। (भारत की गरीबी और उसका समाधान) १९६४. एशिया पब्लिशिंग हाउस, बम्बई। (५२७ पृष्ट)

इण्डियन इकोनॉमिक पॉलिसीः दि गांधियन ब्लूप्रिंट। (भारत की अर्थनीतिः एक गांधीवादी रूपरेखा) १९७८. विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। (१२७ पृष्ट)

इकोनॉमिक नाइटमेयर ऑफ इण्डियाः इट्स कॉज़ एण्ड क्योर। (भारत की भयावह आर्थिक स्तिथिः कारन एवं निदान) १९८१. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। (५९८ पृष्ट)

लैण्ड रिफॉर्म्स इन यू० पी० एण्ड दि कुलक्स। (उत्तर प्रदेश में भूमि सुधार एवं कुलक वर्ग) १९८६. विकास पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली। (२२० पृष्ट)

'विशिष्ट रचनाएंः चौधरी चरण सिंह' भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह द्वारा १९३३ और १९८५ के बीच लिखित २२ महत्वपूर्ण लेखों और भाषणों का संग्रह है। इस पुस्तक के अध्ययन से आज का पाठक वर्ग जान सकेगा कि मौजूदा समय की चुनौतियां न तो नई हैं और न ही समाधानहीन। इनसे निपटने के लिए एक मन–सोच अथवा जिगरा चाहिए, जो निश्चय ही धरा–पुत्र चरण सिंह में था। उनका लेखन उस प्रकाशस्तंभ की तरह है जो समुद्र में भटके हुए जहाजों को किनारे तक आने का रास्ता दिखाता है। उनके लेखन के आलोक में हम मौजूदा चुनौतियों को सही परिप्रेक्ष्य में न केवल समझ सकते हैं अपितु उनका समाधान भी पा सकते हैं। इन लेखों में उनकी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टि के दर्शन होते हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से इन लेखों को सामाजिक लेखन, आर्थिक लेखन, राजनीतिक लेखन एवं उपसंहार – चार खण्डों में विभाजित किया गया है।

चौधरी चरण सिंह की अध्यात्मिक अंतश्चेतना और राजनीतिक मेधा महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं महात्मा गांधी से अनुप्रेरित रही, तो सरदार पटेल उनके नायक रहे। इन विभूतियों पर चौधरी साहब ने अपने विचार लेखों में प्रस्तुत किये हैं। जाति–प्रथा, आरक्षण, जनसंख्या नियंत्रण, राष्ट्रभाषा जैसे सामाजिक मुद्दों के साथ ही शिष्टाचार जैसे विरल विषय पर भी दो लेख **खण्ड एकः सामाजिक लेखन** में दिये गये हैं।

चौधरी साहब भारत की उन्नति का मूल आधार कृषि, हथकरघा और ग्रामीण भारत को मानते थे। उनकी दृष्टि में ग्रामीण भारत ही वह नियामक तत्व रहा जिसे प्रमुखता देकर देश को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सकता है, साथ ही बेरोजगारी जैसी विकट समस्या को भी दूर किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश में भूमि सम्बंधी सुधारों और जमींदारी समाप्त करने को लेकर चौधरी चरण सिंह पर धनी किसानों के पक्षधर होने के आरोप विरोधियों ने लगाये। उनका उन्होंने बेहद तार्किक ढंग से उत्तर दिया है। गांव–किसान और खेती के प्रति उपेक्षापूर्ण नीतियां एवं काले धन की समस्या जैसे तथा उपरोक्त विषयों पर केन्द्रित लेख **खण्ड दोः आर्थिक लेखन** के अन्तर्गत दिये गये हैं।

खण्ड तीनः राजनीतिक लेखन के अन्तर्गत भारत की लम्बी गुलामी के मूल कारणों का विश्लेषण, गांधी–चिंतन, देश में पहली गैर–कांग्रेसी जनता पार्टी की सरकार की आधारभूत नीतियां, देश विख्यात माया त्यागी कांड का समाजशास्त्रीय विश्लेषण, भाषा आधारित राज्यों के खतरे आदि मुद्दों के अलावा उनके नायक सरदार पटेल की स्मृति पर आधारित लेख हैं। इसी खण्ड में चौधरी साहब के ऐतिहासिक महत्व के दो भाषण भी संकलित हैं, जो लोकशाही पर संकट और राष्ट्रीय विघटन के खतरों के प्रति सचेत करते हैं।

अंतिम **खण्ड चारः उपसंहार** है, जिसमें चौधरी साहब ने राजनीति, समाज नीति और देश से सम्बंधित अधिकतर मुद्दों पर संक्षेप में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं।

Charan Singh Archives
www.charansingh.org

मूल्य ₹६६